

बकरियों का आहार प्रबन्धन

डा० पंकज कुमार सिंह

सहायक प्राध्यापक

पशु पोषण विभाग, बिहार पशु चिकित्सा महाविद्यालय,
बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना, बिहार-800014

e-mail:vetpank@gmail.com

परिचय

बकरी पालन भारत वर्ष के साथ जुड़ा हुआ एक लाभकारी व्यवसाय है। बकरियों के पोषण हेतु हमारे देश में मुख्यतः सघन, अर्धसघन एवं विरल पद्धतियाँ अपनाई जाती हैं। बकरी पालकों द्वारा इन पद्धतियों को अपनाने का मुख्य आधार, चारे की उपलब्धता, बकरी पालकों की आर्थिक स्थिति, चरागाह एवं जंगल की उपलब्धता एवं पाली गई बकरियों की संख्या के ऊपर निर्भर करता है। सघन पद्धति के अन्तर्गत बकरियों को मुख्यतः बाड़े में रखकर ही पालते हैं एवं इनके पोषक तत्वों की आवश्यकताएँ, हरा चारा, भूसा एवं दाने को देकर पूर्ण करते हैं। अर्धसघन पद्धति में बकरियों को चरने हेतु भेजा जाता है। ऐसी बकरियों की पोषण आवश्यकताएँ काफी हद तक चरने से पूर्ण होती हैं, जो पोषक तत्व चरने से नहीं मिल पाते उन्हें बाड़े में भूसा हरा चारा एवं दाना, पूरक आहार के रूप में देकर पूर्ण किया जाता है। तीसरी पद्धति है विरल पद्धति, इसके अंतर्गत बकरी पालक प्रायः बकरियों को चराकर ही बकरियों को पोषक आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं। बकरी आमतौर पर जंगल झाड़ी और खेत-मैदान में घूम-फिर कर अपना पेट भरती है। इसे गाय की तरह चौबीस घंटा खूटी से बाँधकर अच्छा-से-अच्छा पोषक चारा खिलाने के बावजूद पालना संभव नहीं है। बकरीपालन की तीन विधियाँ हैं—

1. चराकर पालना :

इस विधि में बकरियों को पालना आसान है। लेकिन व्यावसायिक दृष्टि से यह लाभकारी नहीं हो सकती क्योंकि इसमें बकरियों के वजन में अधिक वृद्धि नहीं होती है। इसके कारण बाजार में इनकी कीमत कम मिलती है। जंगल तथा पहाड़ी इलाका जहाँ खेती योग्य भूमि कम है वहाँ इस विधि से बकरी पाला जा सकता है।

2. खूँटे पर खिलाकर पालना :

इस विधि को केवल बारबरी एवं सिरोही नस्ल की बकरियों को पालने के लिए ही अपनाई जा सकती है। दूसरे नस्ल की बकरियों को इस विधि से पालना संभव नहीं है।

3. चराकर और खूँटे पर खिलाकर पालना :

इस विधि में बकरियों को 7-8 घंटा चरने दिया जाता है। इसके बाद बकरीघर में लाकर हरा चारा और पत्तियाँ तथा कुछ दाने का मिश्रण भी खिलाया जाता है। यह बकरीपालन की सबसे उत्तम विधि है। इसमें बकरियाँ स्वस्थ रहती हैं। साथ ही वजन में भी काफी वृद्धि होती है। इससे बाजार में मूल्य ज्यादा मिलता है। इसलिए कारोबार की दृष्टि से यह विधि अधिक अपनाई जाती है। अच्छा यह होगा कि आप इस विधि को ही अपनाएँ।

बकरियों का आहार :

बकरी जुगाली करने वाली जानवर है। इसके पालन का तरीका भेड़ और गाय से बिल्कुल अलग है। पूरा खाना एक बार में न खाकर वह हर समय थोड़ा-थोड़ा खाना पसंद करती है।

इसीलिए अच्छे मुनाफा के लिए इसके आहार का उचित प्रबंध करें। बकरी को मुख्य रूप से तीन प्रकार का चारा दिया जाता है— हरा चारा, सूखा चारा, और दाना।

हरा चारा :

बकरियों के चारे में हरे चारे का विशेष महत्त्व है। इसमें पोषक तत्व जैसे प्रोटीन, खनिज लवण और विटामिन भरपूर मात्रा में होता है। ये अनेक प्रकार के होते हैं। हरा चारा आप कई स्रोत से पा सकते हैं। जैसे जंगली घास, पेड़-पौधे की पत्तियाँ और फलियाँ, सब्जियों के पत्ते तथा उपफल इत्यादि। इनके अलावा आप हरा चारा अपने खेत में भी उगा सकते हैं। जैसे बरसीम, रिजका, लोबिया आदि।

सूखा चारा :

बबूल की सूखी पत्तियाँ, अरहर, चना, मटर का भूसा, मूँग और उड़द की सूखी पत्तियाँ बरसीम या रिजका का सूखा चारा बकरियाँ खूब चाव से खाती हैं। अगर गेहूँ के भूसे खिलाना हो तो सानी में मिलाकर खिलाएं, इससे भूसा के स्वाद में बढ़ोत्तरी होती है और बरबादी कम होती है। सूखा चारा बकरी को हर रोज खिलाएँ। इससे बकरियों का पेट ठीक रहता है।

सूखा हरा चारा यानी बरसीम, रिजका, लोबिया, मकई, नेपियर अगर सूखाकर रखा गया हो तो इससे अच्छा दूसरा कोई चारा नहीं हो सकता है। सूखा चारा बनाने की विधि अगले अध्याय में बतायी गयी है।

दाना —

बकरियों के बेहतर स्वास्थ्य के लिए हरा एवं सूखा चारा के साथ-साथ दाना का मिश्रण देना भी जरूरी है। यह प्रायः मकई, जौ के साथ खल्ली मिलाकर तैयार किया जाता है। इनमें प्रोटीन, विटामिन और खनिज लवण भरपूर मात्रा में होने के कारण यह संतुलित आहार होता है। बढ़ते हुए मेमने, गाभिन मादा, दूध देने वाली मादा एवं प्रजनन में लाये जाने वाले बोक़ा के लिए यह आवश्यक होता है। बकरियों को दाने का मिश्रण, उनकी उम्र तथा उत्पादकता के अनुसार दिया जाता है।

कब कितना खिलाएँ :

बकरियों को उनके भार का औसत 4 प्रतिशत कुल शुष्क खाद्य पदार्थों की आवश्यकता होती है। शुष्क पदार्थ से अभिप्रायः यह है कि बकरी को दिये जाने वाला कुल सूखा चारा, दाना की कुल मात्रा तथा हरे चारे में शुष्क पदार्थ की मात्रा को जोड़ कर जो मात्रा आती है उसे कुल शुष्क पदार्थ कहते आहार की मात्रा बकरी के वजन, उम्र और स्थिति पर निर्भर करती है। मेमने, दूधारू तथा गाभिन बकरियों को अलग-अलग तरह से चारा देना चाहिए। दुधारू बकरी को बरसीम और लूसर्न घास देने से ज्यादा पोषण मिलता है। सफल बकरीपालन के लिए, इस बात की जानकारी रखना जरूरी है कि बकरियों को किस उम्र में कितना और कौन सा चारा देना चाहिए। अनुकूल वृद्धि के लिए अलग-अलग मात्रा में खाना देना आवश्यक है। आहार में हरा चारा, सूखा चारा एवं दाना लगभग 15, 65 एवं 20 प्रतिशत होना चाहिए।

प्रत्येक उम्र की बकरी की अलग-अलग समय पर दिये जाने वाले हरा चारा, सूखा चारा एवं दाना की आवश्यकताएँ होती हैं।

मेमनों का आहार प्रबन्धन

नवजात शिशुओं के लिये तीन माह की आयु तक माँ का दूध आदर्श आहार है जिससे उनकी पोषण आवश्यकताओं की पूर्ति होती है। वृद्धि की अवस्था में पोषण प्रबन्ध शिशुओं की उचित

वृद्धि हेतु अति आवश्यक है इससे रोग व मृत्यु दर में कमी होती है। बकरी पालकों को वृद्धि की इस अवस्था में शिशुओं का सम्पूर्ण प्रबन्ध हेतु अति जागरूक रहना चाहिये।

खीस का महत्व

बकरी के बढ़ते मेमनों की उचित वृद्धि और रोग प्रतिरोधक क्षमता के लिये उनका उचित पोषण अति आवश्यक है। जन्म के तुरन्त बाद खीस पिलाना उनकी प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने में सहायक है। जन्म के बाद मेमनों को खीस पिलाना अत्यन्त आवश्यक है। खीस में प्रोटीन की मात्रा साधारण दूध में पाई जाने वाली प्रोटीन की मात्रा की 4 गुना होती है जो ऊर्जा का प्रमुख स्रोत है। यही नहीं, खीस में पाई जाने वाली प्रोटीन में उपस्थित इम्यूनोग्लोब्यूलिन बच्चे के रक्त में समायोजन की दर धीरे-धीरे कम होती जाती है जो 24 घंटे बाद प्रायः शून्य हो जाती है। इसलिये जन्म के समय बच्चों की अपेक्षाकृत अधिक ऊर्जा की आवश्यकता को पूरा करने तथा उनमें रोग प्रतिरोधक क्षमता के विकास हेतु खीस पिलाना नितान्त आवश्यक है।

खीस की मात्रा

खीस की मात्रा बच्चों के शरीर भार के अनुसार पिलानी चाहिये। यह मात्रा शरीर भार के 1/10 भाग के बराबर होनी चाहिये जिसे 24 घंटे में 2 या 3 बार में देते हैं। प्रथम बार खीस बच्चे के जन्म के उपरान्त उसके शरीर को पोंछ कर साफ करने के बाद जितना जल्दी सम्भव हो पिलाना चाहिये। कोशिश यह होनी चाहिये कि प्रथम बार खीस जन्म 1/2 घंटा तक के समय में पिला देना चाहिये। जैसे-जैसे समय व्यतीत होता जायेगा खीस का महत्व कम होता जायेगा।

दूध विकल्प

कुछ कारणों, जैसे एक से अधिक बच्चों का जन्म, माँ के दूध की कमी, व्यवसायिक शिशु पालन, शिशु को माँ से जल्दी अलग करना, अच्छी बकरियों का वर्ष में दो बार ब्याहना आदि से माँ के दूध की उपलब्धता कम होती है। इसलिये बच्चों के लिये दूध के विकल्प की आवश्यकता होती है। इससे एक से अधिक संख्या में पैदा हुये बच्चों का जीवन सुरक्षित रहता है तथा वृद्धि दर नियमित रहती है। न्यूनतम दुग्ध उत्पादन एवं अधिक शिशु जन्म दर की अवस्था में शिशु की मृत्यु दर दूध की कमी के कारण काफी बढ़ जाती है। इस अवस्था में दुग्ध विकल्प का उपयोग करके शिशुओं की जीवन रक्षा की जा सकती है। मध्यम तथा अधिक दुग्ध उत्पादन करने वाली मादाओं के लिए माँ के दूध के स्थान पर दुग्ध विकल्प प्रयोग किया जा सकता है। अतः बाकी दूध मनुष्यों के प्रयोग में लिया जा सकता है। केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान द्वारा माँ से अलग होने से पहले की अवस्था में बकरी के बच्चों के लिये दुग्ध विकल्प विकसित कर उसका परीक्षण किया गया है। दुग्ध विकल्प में वसा रहित दुग्ध चूर्ण 47 प्रतिशत, सोयाबीन आटा 9 प्रतिशत, गेहूँ का आटा 35 प्रतिशत नारियल का तेल 7 प्रतिशत, खनिज मिश्रण 2 प्रतिशत तथा 0.2 मि.ली. ब्यूटाइरिक अम्ल, 2 ग्राम साइट्रिक अम्ल और एक पैक लैक्टो बैसिलार्ड चूर्ण होता है।

इस दुग्ध विकल्प में 24 प्रतिशत सी.पी. (कड प्रोटीन) माँ के दूध के समान होती है। अतः बकरी पालकों को बकरी के बच्चों को माँ के दूध के स्थान पर धीरे धीरे दुग्ध विकल्प देना चाहिये। पुनः दुग्ध विकल्प बनाने के लिये 135 ग्राम दुग्ध विकल्प चूर्ण को एक लिटर स्वच्छ एवं हल्के गर्म पानी में घोलकर तैयार करके मेमनों की आवश्यकतानुसार (प्रायः 250-400 मि.ली./दिन/शिशु) बच्चों के शरीर भार के अनुसार एक स्वच्छ दूध की बोतल द्वारा बच्चों को पिलाना चाहिये।

जन्म से तीन महीने तक भेमनों के आहार :

इस उम्र में बकरी के बच्चे नस्ल आधार पर 1 किलो 600 ग्राम से 7 किलों तक के होते हैं। ये प्रायः अपनी माँ का दूध पीते हैं। पहले से चौथे या सातवें दिन तक बच्चे को फेनुस या खीस की भरपूर मात्रा पिलाएँ। इससे मुख्यतः दो फायदे हैं। पहला तो यह कि बच्चों को घूमने-फिरने तथा अन्य क्रियाओं के लिए आवश्यक ऊर्जा की पूर्ति होती है। दूसरा यह कि यह बच्चों को जानलेवा बीमारियों से रक्षा करता है। अगर बच्चों की खीस न पिलाया जाये तो उनकी शरीर में बीमारी के कीटाणुओं के खिलाफ लड़ने की क्षमता कम हो जाती है। इसके बाद उन्हें माँ से अलग कर दें दिन में केवल 2-3 बार ही दूध पीन दें। इसके अलावा इस उम्र में उनको शुरुआती दाना खिलाना शुरु कर दें। इसे अंग्रेजी में क्रीप या स्टार्टर कहते हैं।

स्टार्टर दाना बनाने का फार्मूला इस प्रकार है-

सामग्री		मात्रा
1.	मकई	32 प्रतिशत
2.	मूँगफली की खल्ली	35 प्रतिशत
3.	गेहूँ का चोकर	20 प्रतिशत
4.	खनिज मिश्रण (मिनिरल मिक्सचर)	2.5 प्रतिशत
5.	नमक	0.5 प्रतिशत
6.	फिश मील	10 प्रतिशत

दाना तैयार करना कोई मुश्किल काम नहीं है। ऊपर बताई गई चीजें बाजार से खरीद लें। उनका दर्रा बना लें। फिर उचित मात्रा के अनुसार उन्हें आपस में मिला दें। बस स्टार्टर दाना तैयार। यह दाना बाजार में भी मिलता है। लेकिन वह ज्यादा महंगा होता है तथा इसकी गुणवत्ता संदेहजनक भी हो सकती है।

दाना तैयार करने के लिए बाजार से सामान खरीदते समय इस बात की सावधानी अवश्य बरतें कि वह पुराना या फफुँदी लगा न हो। इसके खा लेने से बकरियों की अनेक प्रकार की रोग हो जाते हैं।

4 से 6 महीने तक के भेमनों के आहार

इस उम्र में बकरी के वजन में अधिक वृद्धि होती है। अच्छे किस्म का हरा चारा यानी रिजका, बरसीम, लूसर्न, जिसमें प्रोटीन की मात्रा अधिक हो, इसकी वृद्धि में बहुत सहायता करता है। अगर दलहन जातीय चारा यानी मसूर, मूँग, अरहर आदि की पत्तियाँ उपलब्ध न हो सके, तो दाना देकर इसकी पूर्ति करनी चाहिए।

इस उम्र में जो दाना दिया जाता है, उसे बढ़ती हुए बकरी का दाना कहा जा सकता है। इसकी सामग्री और मात्रा इस प्रकार है-

सामग्री		मात्रा
1.	चना	15 %
2.	मकई	37 %
3.	मूँगफली की खल्ली	25 %
4.	गेहूँ का चोकर	20 %
5.	खनिज मिश्रण	2.5 %
6.	नमक	0.5 %

हरा चारा की तरह चह दाना भी वजन के हिसाब से दें। इस समय प्रति बकरी 1 किलो से 1.50 किलो प्रति माह तक दाना की जरूरत है।

7 से 10 महीने तक मेमनों के आहार :

इस आयु का बच्चा माँस के लिए बेचने लायक हो जाता है। इसलिए इस समय का आहार ऐसा होना चाहिए जिससे बकरी के वजन में ज्यादा वृद्धि हो। इससे बाजार में अच्छी कीमत मिलती है।

इस उम्र में जो दाना खिलाया जाता है, उसे फिनिशर दाना कहते हैं। खिलाने से वनज में एक तिहाई वृद्धि हो सकती है। इस समय प्रति बकरी 1.5 से 3.0 किलो दाना प्रतिमाह आवश्यक होती है। ज्यादा खिलाने से पेट खराब होने के भी सभावना रहती है।

यहाँ सुविधा के लिए फिनिशर दाना तैयार करने के लिए तीन फार्मूले दिए जा रहे हैं। इसके अनुसार आपके आसपास जो सामान सस्ता और आसानी से मिल जाए, उसे मिलाकर फिनिशर तैयार कर लें। इससे बकरीपालन के खर्च में कमी लायी जा सकती है।

फार्मूला – 1

सामग्री		मात्रा
1.	मकई का दरा	22 %
2.	मूँगफली की खल्ली	15 %
3.	गेहूँ का चोकर	30 %
4.	अरहर या किसी और दाल की चून्नी	15 %
5.	सरसों की खल्ली	15 %
6.	खनिज लवण	2 %
7.	नमक	1 %

गाभिन बकरी का आहार :

मादा बकरियों को ग्याभिन कराने के समय पोषण व्यवस्था उत्तम प्रकार की होनी चाहिए। प्रायः देखा गया है कि दूध देने के कारण या उत्तम प्रकार के पोषण न होने के कारण बकरियों का स्वास्थ्य कमजोर हो जाता है। आमतौर से देखा जाता है कि जो खुराक अन्य बकरियों को दी जाती है, वही गाभिन बकरियों को भी दी जाती है। व्यापार की दृष्टि से ऐसा करना उचित नहीं है। इस प्रकार की बकरियों में गर्भधारण की क्षमता प्रायः कम हो जाती है। अतः बकरी पालकों को चाहिए कि इस प्रकार की बकरियों को ग्याभिन कराने के करीब दो सप्ताह पूर्व लगभग 100–200 ग्राम दाना अतिरिक्त देना चाहिये जिससे कि इन बकरियों की गर्भ धारण करने की छमता में सुधार आ सके। गर्भावस्था के अंतिम छठे से सातवें सप्ताह के अंदर बच्चे की 70–80 प्रतिशत वृद्धि होती है। अतः इस दौरान बकरी की अच्छे किस्म का हरा चारा खिलाएँ। जब बकरी के ब्याने के करीब 4.5 दिन रह जाए उस समय जो सामान्य पोषण चल रहा है उससे अतिरिक्त 300–400 ग्राम दाना प्रति दिन प्रति बकरी देना आवश्यक है।

दुधारू बकरी का आहार :

दुधारू बकरियों को सामान्य बकरियों से ज्यादा पौष्टिक और संतुलित आहार की आवश्यकता होती है। औसतन एक दुधारू बकरी दिन में 3 से 4 किलोग्राम हरा चारा और सुखा चारा खा सकती है। इसके अतिरिक्त प्रति एक किलो ग्राम दूध के लिए 300 ग्राम तक दाना दें। दाना की मात्रा को दिन में दो बार बराबर मात्रा में दें।

बकरा का आहार :

प्रजनन में काम आने वाले बकरे (बोका) को अच्छे और संतुलित आहार की जरूरत होती है। ऐसे बकरे आमतौर पर चरने नहीं जाते हैं। इसलिए बकरों को हरा और सुखा चारा के अलावा 400 से 600 ग्राम तक दाना प्रतिदिन देना आवश्यक है। बोका को उपयोग में नहीं लाने के समय उसको आहार में दाना की मात्रा कम कर दें। अगर बोका ज्यादा जर्बीदार या मोटा हो गया तो उसे कम चारा खिलायें यानी आधा कर दें। साथ ही ऊर्जा पैदा करने वाली चीजें जैसे मकई, चावल और गेहू की मात्रा भी कम कर दें।

बकरियों के चारा खिलाने में कुछ सावधानी –

- सभी हरे चारे को बंडल बनाकर लटकाकर रखें।
- चारे को खराब होने से बचाएँ।
- चारा रोजाना थोड़ा-थोड़ा 3-4 बार में दें।
- एक या दो घंटे की गीली घास न दें।
- धूप में सुखी पत्तियाँ भी दे सकते हैं।
- बसी हरा चारा हरगिज न दें। इनमें फफूंदी और कीड़े लग जाते हैं।

पानी :

चारा एवं दाना की तरह पानी की व्यवस्था करनी भी जरूरी है। पानी कम होने पर आहार नहीं पचेगा, वजन में अनुरूप वृद्धि नहीं हो पाएगा। सामान्य मौसम में एक 20 किलो वजन की बकरी को करीबन 700 मिलीलीटर पानी कि जरूरत होती है। गर्मी के मौसम में इससे डेढ़ गुणा पानी की जरूरत होती है। गंदा पानी अक्सर कई तरह की बीमारियों के कीटाणु का वाहक होता है। इसलिए हमेशा साफ पानी ही पिलाएँ।

आहार प्रबन्धनकी कुछ तथ्य

- बच्चों को अधिक मात्रा में दाना नहीं खिलाना चाहिये।
- दिये जाने वाले आहार की बरबादी से बचाने हेतु बच्चों को कई बार में देना चाहिये।
- बकरी पालकों को आहार को वर्षा इत्यादि से बचाव के उचित प्रबन्ध करना चाहिये।
- बकरी पालकों को आहार/आहार घटकों को उपलब्धता के समय खरीदना चाहिये क्योंकि इस समय सस्ते होते हैं।
- आहार अवयवों का भण्डारण 12 प्रतिशत नमी से कम पर करना चाहिए। नमी की अधिकता में फफूंदी का प्रकोप हो सकता है।